परिशिष्ट

इलाहाबाद, 21-12-2005

प्रिय श्रीमती संध्या प्रेमचन्द, गोड़

आपका पत्र और प्रश्नावली — दोनों ही प्राप्त हुए। धन्यवाद। कुछ कारणों से उत्तर भेजने में विलम्ब हुआ। मैं आपके प्रश्नों के उत्तर लिख कर भेज रहा हूँ, आशा है कि आपको ठीक लगेंगे और आपका काम चल जायेगा। चित्र भेजने में दिक्कत हो रही है। इस समय कोई ठीक तस्वीर अपनी उपलब्ध नहीं है। आगे संभव हुआ तो भेज दूंगा।

नये वर्ष की शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय

अमरकान्त

आदरणीय अमरकांत जी,

सर मैं आपको एक प्रश्नावली भेज रही हूँ। आप इसके सवाल इसी खत द्वारे लिखकर भेज दीजिए। बड़ी कृपा होगी मैं आपके 'मौत का नगर' इस कहानी संग्रह पर लघु शोध प्रबंध एम.फिल की उपाधि के लिए लिख रही हूँ तो मुझे आपके बारे में कुछ जानकारी चाहिए थी इसलिए मैं आप एक प्रश्नावली भेज रही हूँ।

प्रश्नावली

1) सर, आपका बचपन कहाँ और कैसे बीता?

मेरा बचपन गाँव में बीता। मैं गाँव में पैदा हुआ और वहीं मेरी प्राइमरी शिक्षा आरम्भ हुई। इसके बाद मैं शहर - से कस्बे में चला गया, जहाँ से मैंने हाईस्कूल पास किया।

2) सर, बचपन में आपकी कौन-कौन सी रुचियाँ थी?

बचपन में मेरी रुचियाँ पढ़ने और खेलकूद, दोनों ही में थीं। पाठ्य पुस्तकें इतना नहीं पढ़ता था, जितना बाहरी पुस्तकों। मैं लालटेन की रोशनी में कभी - कभी रात भर पढ़ता रहता ~~ेख~~ था।

3) सर आपकी शिक्षा कहाँ हुई?

मेरी प्राइमरी शिक्षा गाँव से आरम्भ हुई। अंत ~~में~~ जिला मुख्यालय बलिया के गवर्नमेंट हाई स्कूल से मैंने हाई स्कूल किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी. ए.।

4) सर आपका विवाह कब हुआ?

मेरा विवाह सन 1946 ई. में हुआ। मेरी पत्नी का नाम गिरिजा था। अब वे नहीं हैं।

5) सर, आपके साहित्यिक जीवन का आरंभ कहाँ से हुआ

मेरा साहित्यिक जीवन आगरा में शुरू हुआ सन 1950 ई. में। वहाँ मैंने अपनी पहली कहानी 'इन्टरव्यू' लिखी, जो मेरे कहानी - संग्रह में संकलित है।

6) सर आपकी दृष्टि से आपके साहित्य का कथ्य तंत्र कैसा बना है?

मैं जीवन के यथार्थ को अभिव्यक्त करने की कोशिश करता हूँ। मेरा कथ्य अभिधात्मक है, शिल्प भी अनुभूति चमत्कार-रहित ही होता है।

7) सभी उपन्यासों कहानियों व्यंग्य से आपको अपनी कौनसी कृति प्रिय लगती है? और क्यों?

— मैंने कई कहानियां तथा उपन्यास लिखे हैं। कौन-सी रचना प्रिय है - यह एक जटिल सवाल है। बहरहाल कई कहानियाँ पाठकों एवं आलोचकों को प्रिय हैं जिनको मैं यहां क्रम से लिख रहा हूँ — दोपहर का भोजन, डिप्टी-कलक्टरी, जिन्दगी और जोंक, मुरदे, हत्यारे।

8) सर आप की विशेष रुचि किस विधा में है और क्यों?

— मैंने कविता नहीं लिखी। मैंने शुरुआत कहानी से की और बाद में उपन्यास का लेखन हुआ। दोनों विधा — कहानी और उपन्यास विधा — में ही मेरी दिलचस्पी है।

9) सर आप अपनी दृष्टि से आदर्श साहित्य किसे मानते हैं और आपके प्रिय साहित्यकार कौन हैं?

साहित्य वही उत्तम है जो जीवन के यथार्थ को, उसके समग्र रंगों में, ठीक प्रकार अभिव्यक्त करे, जो मनुष्य समाज के सुन्दर ख्यालों में उठा ले जाए और मानवीय संवेदना से समृद्ध करे। साहित्यकार भी अनेक हैं, जिन्हें पसन्द करता हूँ। यदि हिन्दी लेखकों तक सीमित करें मैं यहां कुछ नाम लेता हूँ, प्रेमचन्द, रामचन्द्र शुक्ल, निराला, यशपाल, जैनेन्द्र कुमार, अज्ञेय, हरिवंशराय बच्चन, महादेवी वर्मा, मुक्तिबोध, भीष्म साहनी। और भी अनेक नाम हैं दूसरी भाषाओं के लेखकों के। यदि उन नामों को दूं तो सूची बड़ी लम्बी हो जायेगी।

10) सर, आप एक साहित्यिक जीवन जीते हैं किस विचारधारा से प्रभावित रहे हैं?

मैं राजनीतिक विचारधारा में विश्वास करता हूं। मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान एक और मजबूत हो और यहां से जातीय, धार्मिक और साम्प्रदायिक भेदभाव सदा के लिए मिट जायें। और सभी मिलजुल कर एक स्वावलम्बी और खुशहाल समाज बनाने के लिए खूब मेहनत करें। सभी लोग स्वाभिमान और प्रेम से रहकर समृद्धि की ओर बढ़ें अपने लिए, सबके लिए, समाज के लिए और देश के लिए।

11) सर, आपको शौक कौन-कौन से हैं?

— मेरी उम्र अधिक हो गई। पहले भी मुझे कोई खास शौक नहीं था। खाने-पीने पहनने-ओढ़ने का कभी भी शौक नहीं रहा। शराब मैंने कभी नहीं पी। कुछ दिनों तक सिगरेट जरूर पी थी, वह भी छोड़ दी। हां पढ़ने का शौक था और लिखने का। यह शौक अब भी चला रहा है।

12) सर, आपकी शीघ्र प्रकाशित होनेवाली रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?

— अभी मैंने एक छोटा उपन्यास लिखा है, जिसका शीर्षक है 'लहरें'। वह दिल्ली की एक मासिक पत्रिका 'कादम्बिनी' के पिछले अक्तूबर अंक में पूरा छपा है। मैं पत्रकारों के जीवन पर एक बड़ा उपन्यास लिख रहा हूं, यदि पूरा हो गया तो अगले वर्ष के अन्त में छप सकता है। इसका नाम है 'खबर का सूरज'।

13) आपका काव्य ज्यादातर राजनीतिक, सामाजिक पर दिखायी देता है क्यों?

— मैंने हर तरह की चीजें लिखने की कोशिश की है। समाज में विसंगतियाँ होती हैं तो लेखक को व्यंग्य का सहारा भी लेना पड़ता है। और राजनीति का तो यह युग ही है। आप उससे कैसे बच सकते हैं?

14) सर, आप नई पीढ़ी के लिए संदेश स्वरूप कुछ कहना चाहते हैं?

— नई पीढ़ी के लिए क्या कहूँ? समय तेजी से बदल रहा है। नई पीढ़ी को स्कूल पाठ्यक्रम के साथ नवीनतम ज्ञान-विज्ञान में अपनेको पारंगत करना चाहिए और अपने लिए उपयुक्त रास्ते का चुनाव करके आगे बढ़ना चाहिए और अपने क्षेत्र में कुछ ऐसा करना चाहिए जिससे अपने समाज और देश का मस्तक ऊँचा हो सके।

— चन्द्रकान्त
32, एल. आई. जी.
गोविन्दपुर,
इलाहाबाद - 211004
उ०प्र०।